इकाई 1 भारत: प्राकृतिक विशेषताएं

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि:

- किसी देश के इतिहास के अध्ययन के लिए इसके भौगोलिक लक्षणों और विशेषताओं की जानकारी आवश्यक क्यों है ?
- इतिहास के एक विद्यार्थी के रूप में प्राकृतिक विशेषताओं को हम किस तरह देखते हैं,
- पर्यावरण, भूगोल और इतिहास के बीच क्या सम्बन्ध है,
- भारतीय उपमहाद्वीप में ऐतिहासिक विकास का स्वरूप असमान क्यों है।

1.1 प्रस्तावना

बिना भूगोल के इतिहास प्राय: अधूरा रहता है और अपने एक प्रमुख तत्व से वंचित हो जाता है। यानी स्थान की अवधारणा के अभाव में इतिहास अपने लक्ष्य से भटक सकता है। यही कारण है कि इतिहास को मानव जाति के इतिहास और पर्यावरण के इतिहास, दोनों ही रूपों में देखा जाता है। इन दोनों को अलग करना कठिन है। मानव इतिहास और पर्यावरण का इतिहास दोनों ही परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मिट्टी, वर्षा, वनस्पति, जल-वायु और पर्यावरण मानव संस्कृतियों के उद् विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वस्तुत: मानव प्रगति का सार प्रकृति को नियन्त्रित करके मानव जीवन को बेहतर बनाने में है। इस सम्बन्ध में तकनीकी प्रगति पर्यावरण को अपने नियंत्रण में लाने में मनुष्य की मदद करती है। मनुष्य प्रभावशाली ढंग से अपने पर्यावरण पर नियंत्रण स्थापित करने में इतिहास के बहुत आगे के चरण में ही सफल हो पाया। अत: जब हम अपने अतीत को समझने का प्रयास करते हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि हम उस भूगोल, पर्यावरण और उन प्राकृतिक क्षेत्रों को समझने और जानने का प्रयास करें जिन्होंने भारतीय इतिहास को प्रभावित किया। इस इकाई में हम आपको भारतीय उपमहाद्वीप की उन प्राकृतिक विशेषताओं से अवगत कराने का प्रयास करेंगे जिनका कि भारत के ऐतिहासिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

1.2 प्राकृतिक भूगोल और इतिहास

मिट्टी, स्थलाकृति, वर्षा और जलवायु की विविधता ने अलग-अलग प्रकार के अनेक ऐसे क्षेत्र बनाए हैं जिनके प्राकृतिक लक्षण और पहचानें भी अलग-अलग हैं। प्राकृतिक क्षेत्र सांस्कृतिक क्षेत्रों के अनुरूप होते हैं। इन भिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों में सांस्कृतिक विकास ही भिन्न प्रकार का रहा है। तात्पर्य यह है कि ये क्षेत्र भाषा बोली पोशाक, फसल, जनसंख्या घनत्व, जाति, संरचना आदि की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश और उत्तरी बिहार जैसे कुछ क्षेत्रों में, यानी गंगा घाटी के उपजाऊ मैदानों में जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक है। जबकि पठारी मध्य भारत की बसावट काफी छितरी हुई है। इसी प्रकार मगध, कौशल, अवन्ति, महाराष्ट्र, आन्ध्र कलिंग और चोल देश जैसे कुछ क्षेत्र प्रारंभ में विकसित क्षेत्रों के रूप में उभरे, जबकि अन्य क्षेत्र विकास की दृष्टि से पिछड़े रहे। ऐतिहासिक रूप से विभिन्न प्रदेशों के उद्‌भव की प्रक्रिया असमान रही और विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों का विकास हुआ जो मुख्य रूप से भूगोल और पर्यावरण से संबंधित थीं और उनसे प्रभावित थीं। एक अन्य उदाहरण में हम देखते हैं कि गेहूं पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के लोगों का मुख्य भोजन है जबकि बंगाल, बिहार और उड़ीसा जैसे पूर्वी भारत के प्रदेशों के लोगों का मुख्य भोजन और वहां की मुख्य फसल चावल है। ऐसा क्यों है ? ऐसा इसलिए है कि:

- विभिन्न फसलों के प्राकृतिक वास क्षेत्र भिन्न होते हैं।
- ये फसलें विशेष प्राकृतिक परिस्थितियों में उगती हैं और समय के साथ बाद में ये फसलें उस स्थान विशेष के लोगों की भोजन सम्बन्धी आदतों को प्रभावित करती हैं।

इसी प्रकार सिंचाई के साधन भी अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग हैं।

- नदियां और नहरें उत्तर भारत में सिंचाई का सर्वाधिक प्रमुख साधन रहे हैं।
- प्राकृतिक तालाब पूर्वी भारत में बहुत उपयोगी रहे हैं।
- जलाशयों द्वारा सिंचाई ने दक्षिण भारत की कृषि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इन भिन्नताओं का अर्थ यह नहीं है कि पूर्वी या दक्षिण प्रदेशों में नदियों का महत्व नहीं रहा है। बल्कि इनसे जो बात सामने आती है वह यह है कि विभिन्न प्रदेशों में जल संसाधनों में वृद्धि के लिए लोग विभिन्न तरीके अपनाते हैं। एक क्षेत्र विशेष में अपनाया गया तरीका इस बात पर निर्भर करता है कि वह उस क्षेत्र के लिए कितना उपयोगी है।

भूगोल और पर्यावरण, वस्त्र शैलियों के सम्बन्ध में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए, हम कश्मीरी, राजस्थानी तथा तटवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के वस्त्र और उनके पहनने ओढ़ने के तरीकों की तुलना कर सकते हैं। विभिन्न प्रदेशों की वस्त्र शैलियों पर उन प्रदेश की जलवायु और पर्यावरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

गंगा के मैदान और डेल्टा उन्नत संस्कृतियों के जन्म स्थान रहे हैं, और यहां उनका युगों तक पोषण भी हुआ जबकि मध्य भारत के पर्वतीय इलाकों में अलग-अलग क्षेत्रों के आदिवासी लोगों की अच्छी बसावट रही है। इस तरह जब नदियों के मैदानों में भरपूर प्राकृतिक सम्पदा रही है और मैदानी लोगों का अपना एक विशिष्ट जीवन रहा है, वहां अलग-अलग क्षेत्रों में बसे लोगों का जीवन अन्य भू-क्षेत्रों में हुई प्रगति से अप्रभावित रहा। इसलिए भारतीय उपमहाद्वीप की वस्त्र शैली से संबंधित या भोजन सम्बन्धी आदतों या संस्कृतियों से सम्बद्ध विविधताओं के सहअस्तित्व को यहां के प्राकृतिक भूगोल के संदर्भ में ही ठीक से समझा जा सकता है।

प्राकृतिक भौगोलिक परिस्थितियों द्वारा पोषित क्षेत्रीय भिन्नताएं और उनसे संबंधित भिन्न क्षेत्रीय पहचानें भारतीय इतिहास में स्थायी अखिल भारतीय राज्यों के उदय के मार्ग में बाधा बनी रही हैं। समूचा भारतीय उपमहाद्वीप कभी भी एक राजनीतिक इकाई नहीं रहा। यह बात मौर्य साम्राज्य दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य और साथ ही ब्रिटिश भारत पर समान रूप से लागू होती है। साथ ही यहां यह बताना भी आवश्यक है कि हालांकि भौगोलिक संरचनागत क्षेत्रीय विविधताओं ने हमारे इतिहास में अखिल भारतीय राज्यों के विकास में बाधा पैदा की फिर भी इन विविधताओं ने किसी भी काल में विभिन्न राष्ट्रीयताओं को जन्म नहीं दिया।

भारत के प्राकृतिक क्षेत्र
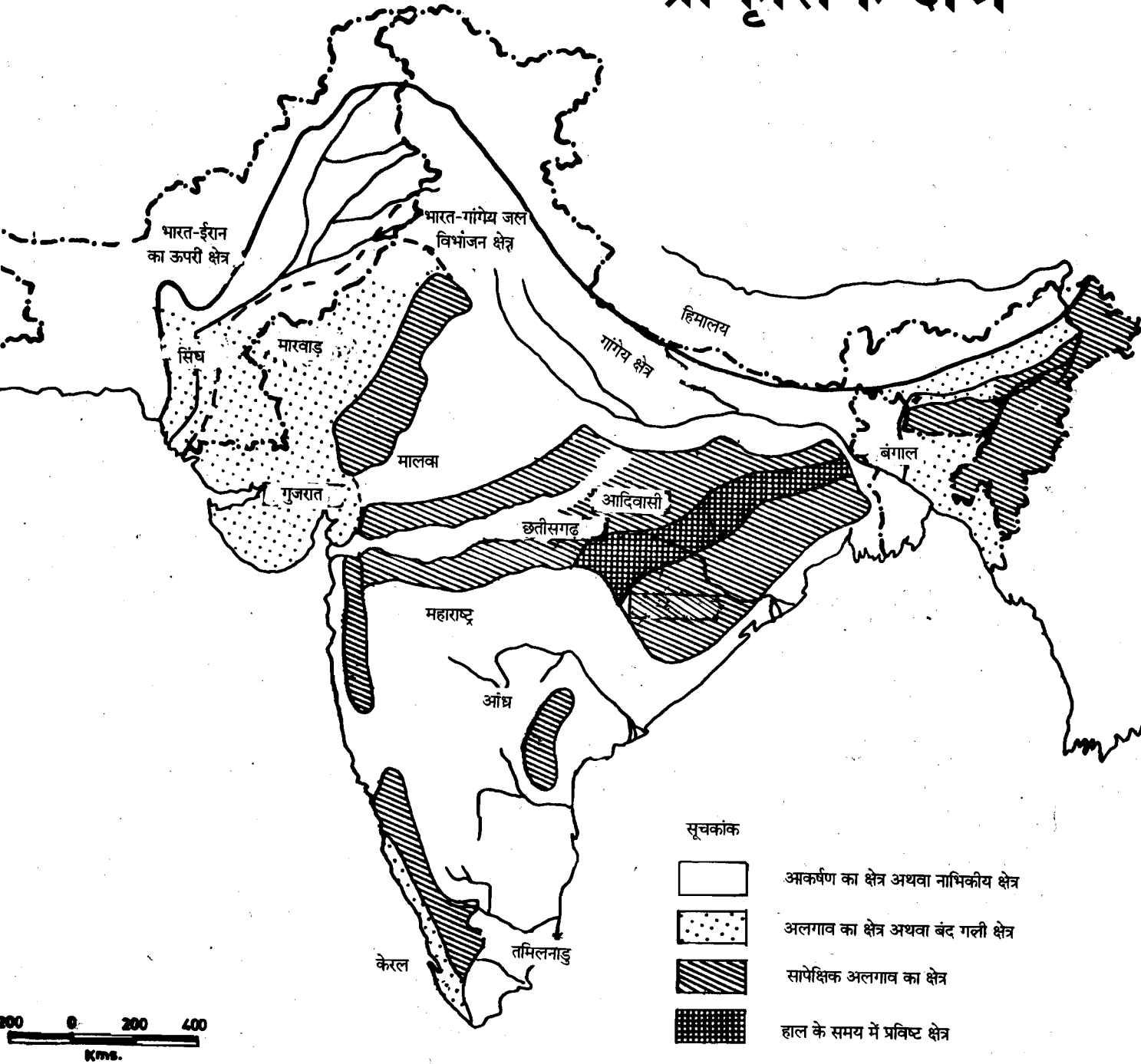
मानचित्र 1.

1.2.1 पर्यावरण और मानव बस्तियां

प्राकृतिक भूगोल मानव बस्तियां और बसावट की शैलियों का परस्पर सम्बन्ध एक और ऐसा महत्वपूर्ण विषय है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, सिंध प्रदेश आज अपेक्षाकृत गर्म और शुष्क है क्योंकि इस क्षेत्र में वर्षा बहुत कम होती है। फिर भी हम जानते हैं कि अतीत में इसी क्षेत्र के अधिकांश भागों में हड़प्पा की सभ्यता का विकास हुआ था। कुछ विद्वानों का मत है कि उस समय इस क्षेत्र की जलवायु नम रही होगी और वर्षा भी अपेक्षाकृत अधिक होती होगी, जिसके कारण यहां उच्चस्तरीय सभ्यता का विकास हो सका और लम्बे समय तक यह सभ्यता बनी रह सकी। कुछ विद्वानों द्वारा यह तर्क भी दिया जाता है कि प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण प्राकृतिक वनस्पति के क्षेत्र को नुकसान पहुँचा और साथ ही शुष्क जलवायु पैदा होने से लोगों के जीवन-निर्वाह का आधार ही खतरे में पड़ गया। इस प्रकार यह सभ्यता नष्ट हो गई (इस विषय पर विस्तृत जानकारी के लिए देखें खंड-2 इकाई-9)।

अनुपयोगी भौगोलिक स्थितियों और भूमि तथा संसाधनों पर पड़ने वाले संभावित जनसंख्यात्मक दबाव ने लोगों को सभ्यता के इस केन्द्र से निकलने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार यह सभ्यता धीरे-धीरे नष्ट हो गई।

दूसरी ओर मगध साम्राज्य की सफलता और इस साम्राज्य द्वारा स्थापित किया गया राजनीतिक प्रभुत्व हमें आश्चर्य में डाल देता है। इसके क्या कारण थे ? यह तर्क दिया जा सकता है कि इस साम्राज्य की स्थापना में कई तत्व सहयोगी बने:

- अत्यधिक उपजाऊ जमीन,
- पर्याप्त वर्षा और उससे होने वाली धान की वार्षिक अच्छी फसल,
- लोहे की खानों तथा छोटा नागपुर पठार के पत्थर और लकड़ी के स्रोतों का निकट होना,
- नदियों द्वारा पर्याप्त संचार और व्यापार की सुविधा उपलब्ध कराना,
- मानव बस्तियों की निकटता और निरंतरता, जो बहुत कुछ इन प्राकृतिक सुविधाओं के कारण संभव हुई, अत्यधिक जनसंख्या घनत्व की ओर इशारा करती हैं।

संयुक्त रूप से इन तथ्यों ने आसानी से उत्तरी गांगेय मैदान पर विजय प्राप्त करने में मदद दी। वास्तव में इन्हीं कारणों से सिंधु-गांगेय का मैदानी प्रदेश, कृषि उत्पादकता और जनसंख्या की दृष्टि से अन्य प्रदेशों से आगे था। उत्तरी मैदानों की ओर सीमाई विस्तार से उस समय निर्विवाद भारतीय सर्वोच्चता की स्थापना का आधार मिला। इस तरह इस क्षेत्र में एक के बाद एक घटने वाली घटनाओं को एक क्रम में देखा जा सकता है। मगध राज्य का भारत पर अधिपत्य उसकी उत्तरी मैदानों की विजय पर आधारित थी। इन मैदानों की भूमि, वर्षा, वनस्पति, सहज संचार सुविधा और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धि ने मगध साम्राज्य को शक्तिशाली बनाने में मदद दी।

मगध के राजनीतिक प्रभुत्व के बढ़ने से इसकी राजधानी पाटलीपुत्र उत्तरी भारत की राजधानी बन गई। साम्राज्यिक राजधानी के रूप में पाटलीपुत्र का महत्व कई शताब्दियों तक बना रहा। पाटलीपुत्र के उत्थान और पतन के अनेक भौगोलिक कारण गिनाए गए हैं। पाटलीपुत्र के इतिहास के प्रारंभिक दिनों में गंगा, सोन और गंडक जैसी नदियां उसे प्राकृतिक संरक्षा प्रदान करती थीं। साथ ही व्यापार और परिवहन की सहज सुविधाएं भी देती थीं। लेकिन प्रथम सहस्त्राब्दि ईसवी के मध्य तक लगातार बाढ़ों के कारण इन नदियों का महत्व कम हो गया। यह सर्व विदित है कि गुप्त काल और उत्तर गुप्त काल में व्यापार की क्षति हुई और नगरों का पतन हुआ गुप्त काल और उत्तर गुप्त काल में उत्तर भारत में व्यापार और वाणिज्य के पतन के साथ मानव गतिविधियों के कम हो जाने और गंगा नदी का मार्ग बदल जाने से इन नदियों की उपयोगिता कम हो गई। इस काल में गांगेय उत्तर भारत में नगरों के पतन के कारणों में भीतरी क्षेत्रों में वनों की कटाई और परिणामत: वर्षा में कमी जैसे भौगोलिक कारण भी बताए गए हैं। हो सकता है कि ये कारण पूरी तरह से सही न हों। फिर भी ये उदाहरण निश्चित रूप से यह बताते हैं कि ऐतिहासिक प्रक्रियाओं और भौगोलिक विशेषताओं के बीच सदैव ही निकट सम्बन्ध रहा है।

1.2.2 भौगोलिक नियतत्ववाद के विरुद्ध तर्क

यहां यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्राकृतिक विशेषताओं और ऐतिहासिक प्रक्रियाओं के विकास के बीच अन्तर्सम्बन्ध को देखना और समझना एक बात है, परन्तु इतिहास को भौगोलिक नियतत्ववाद के अर्थ में देखना एक पूरी तरह भिन्न बात है। भौगोलिक तथ्यों की जानकारी से सांस्कृतिक विकास को भली प्रकार समझने में मदद मिलती है। इससे विभिन्न प्रदेशों में विकास के अलग-अलग तरीकों और शैलियों को भी समझने में सहायता मिलती है। फिर भी भूगोल और पर्यावरण को एकमात्र या प्रमुख नियामक कारकों के रूप में नहीं लिया जा सकता क्योंकि अंततः प्राकृतिक क्षेत्र मात्र संभावनाओं वाले क्षेत्र होते हैं और उन संभावनाओं को मनुष्य अपनी तत्कालीन तकनीकी उपलब्धियों के आधार पर कार्यान्वित करता है। यह कहा जा चुका है कि प्रकृति, विकास का मार्ग तय करती है। जबकि मनुष्य विकास की अवस्था और उसकी गति को तय करता है। इसलिए न तो प्रकृति का प्रभाव स्थायी होता है और न ही मनुष्य और पर्यावरण के सम्बन्ध ही सुस्थिर हैं। मनुष्य अपने अनुभव और अपने औजारों के बल पर प्रकृति द्वारा लगाई गई सीमाओं और बाधाओं पर विजय प्राप्त करता रहा है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो मानवीय अनुभव को निरंतर समृद्ध बनाती है और पर्यावरण पर मनुष्य के नियंत्रण की सीमाओं को निरंतर विस्तार देती जाती है। एक समय में जो प्राकृतिक विशेषताएं और पर्यावरण से सम्बद्ध स्थितियां प्रतिकूल प्रतीत होती हैं दूसरे चरण में वे ही समृद्ध संभावनाओं वाली हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, शिकार-जीवी लोग जंगलों के निकट, या जिन्हें आज हम सीमांत क्षेत्र कहते हैं, वहां रहना पसंद करते थे। लेकिन प्रारंभिक किसानों को लोहे आदि के हल इत्यादि के अभाव में स्वयं को गंगा-यमुना दो-आब के पश्चिम में नर्म भूमि तक ही सीमित रहना पड़ा। ये किसान, गांगेय उत्तरी भारत के समृद्ध जलोढ़ मैदानों पर लोहे के आगमन के साथ ही पहुंच सके और तभी वे घनी वनस्पति और भारी तथा उपजाऊ मिट्टी वाली भूमि का दोहन कर सके।

1.3 आधारभूत भू-आकृतिक विभाजन

अब हम भारतीय उपमहाद्वीप प्राकृतिक लक्षणों के और इन लक्षणों द्वारा निर्मित विभिन्न प्रदेशों की विशिष्टताओं की चर्चा करेंगे। भू-आकृतिक लक्षणों के आधार पर उपमहाद्वीप को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1) हिमालय के पर्वतीय प्रदेश,
2) सिंधु गंगा के मैदान, और
3) प्रायद्वीपीय भारत।

इनमें से प्रत्येक का आगे भी विभाजन किया जा सकता है। यह माना जाता है कि हिमालय पर्वत श्रृंखला की ऊँचाई अब भी बढ़ रही है। हिमालय की पर्वतीय श्रृंखलाओं के अपक्षय और भूमि कटाव के कारण जलोढ़ यानी कछारी मिट्टी निरंतर बह कर भारी मात्रा में इन मैदानों में आती है। हिमालय की बर्फ के पिघलते रहने से सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र तीन बड़ी नदियों में निरंतर जल प्रवाह बना रहता है। उत्तर भारत का कछारी मैदान लगभग 3200 किलोमीटर तक एक धनुष के आकार में सिंधु के मुहाने से लेकर गंगा के मुहाने तक फैला हुआ है। लगभग 320 किलोमीटर चौड़ाई वाला यह मैदान तमाम संभावनाओं से भरा हुआ है। सिंधु के मैदान में भारतीय उपमहाद्वीप की पहली सभ्यता का विकास हुआ जबकि गंगा के मैदान में ईसा पूर्व पहली सहस्राब्दि से नगर जीवन, राज्य, समाज और साम्राज्य सम्बन्धी ढांचे का पोषण और विकास हुआ।

उत्तर के मैदान और प्रायद्वीपीय भारत को, एक विशाल मध्यवर्ती क्षेत्र जिसे किसी बेहतर शब्दावली के अभाव में मध्य भारत कहा जा सकता है, अलग करता है। यह मध्यवर्ती क्षेत्र गुजरात से लेकर पश्चिमी उड़ीसा तक लगभग 1600 किलोमीटर तक फैला हुआ है। राजस्थान की अरावली पहाड़ियां सिंधु के मैदान को प्रायद्वीप से अलग करती हैं। मध्यवर्ती क्षेत्र में विंध्याचल और सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियां और छोटा नागपुर का पठार है जो बिहार, बंगाल

और उड़ीसा के कुछ क्षेत्रों तक फैला है। इस मध्यवर्ती क्षेत्र यानी मध्य भारत को चार उप प्रदेशों में बांटा जा सकता है:

1) उदयपुर और जयपुर के बीच राजपूतों की भूमि,
2) उज्जैन के आस-पास माल्वा का पठार जो प्राचीन समय में अवन्ति के नाम से प्रसिद्ध था।
3) विदर्भ या नागपुर के आस-पास का उप-क्षेत्र, और
4) पूर्वी मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ का मैदान जो प्राचीन काल में दक्षिण कौशल के नाम से जाना जाता था।

हालांकि सामान्य रूप में इस मध्यवर्ती क्षेत्र में संचार तथा आवागमन कभी भी आसान नहीं रहा फिर भी इन चार प्रत्यक्ष रूप से अलग-अलग उप प्रदेशों के बीच आपस में सम्पर्क बना रहा, तथा मध्यवर्ती क्षेत्र और अन्य भौगोलिक क्षेत्रों के बीच भी सम्पर्क बना रहा।

मध्यवर्ती क्षेत्र या मध्य भारत के दक्षिणी सिरे पर वह भू-रचना शुरू होती है जिसे प्रायद्वीपीय भारत कहा जाता है यह एक प्राचीन भू-भाग है जिसमें स्थायित्व के सभी लक्षण मौजूद हैं। यह भू-भाग पठारी है। इस पठारी चट्टानी संरचना का झुकाव पश्चिम से पूर्व की ओर है। इसमें चार प्रमुख नदियां हैं जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। ये नदियां हैं महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी। इन नदियों के कारण इस पठारी क्षेत्र में जलोढ़ मैदान बने और इन मैदानों तथा नदियों के डेल्टाओं में मूल आवास क्षेत्रों का विकास हुआ। यहां दीर्घ काल तक सांस्कृतिक विकास की धारा प्रवाहित हुई जो प्राचीन काल से प्रारंभ होकर मध्य काल मे होते हुए आधुनिक काल तक निरंतर बहती रही।

मध्य भारत में बहने वाली नर्मदा और ताप्ती नदियों का प्रवाह पश्चिम की ओर है। पर्वतीय मध्य भारत में लम्बी दूरी तय करने के बाद ये नदियां गुजरात में अरब सागर में गिरती हैं। उपमहाद्वीप के इस भाग की प्रमुख विशेषता दक्कन का पठार है। यह उत्तर में विंध्य पर्वत श्रेणियों से लेकर कर्नाटक की दक्षिणी सीमाओं तक फैला हुआ है। महाराष्ट्र तथा मध्य भारत के भू-भागों में काली मिट्टी विशेष रूप से उपजाऊ है, क्योंकि इसमें नमी बनी रहती है और इस जमीन को स्वहलित भूमि यानी ऐसी भूमि माना जाता है जिसमें जुताई की आवश्यकता नहीं होती। भूमि की इस विशेषता के कारण वार्षिक वर्षा की कमी और सिंचाई सम्बन्धी अन्य कठिनाइयां फसल के लिए बड़ी बाधा नहीं बनतीं। यह भूमि कपास, ज्वार, मूंगफली और तिलहन की अच्छी फसल देती है इसलिए यह बात आश्चर्यजनक नहीं है कि पश्चिम और मध्य भारत में प्रारंभिक कृषि संस्कृतियां (ताम्र पाषाण संस्कृति) इसी क्षेत्र में उदित हुई। दक्षिण का यह पठार पश्चिम में पश्चिमी घाट तक फैला है और पूर्व में इसकी सीमाएं पूर्वी घाट से लगी हुई हैं। पूर्वी घाट इसको पूर्वी तटवर्ती मैदानों से अलग करता है। मैदान पश्चिम के संकरे मैदानों की तुलना में कहीं अधिक चौड़े हैं। नीलगिरी और कार्डोमोम पहाड़ियों मूल प्रायद्वीपीय संरचना की उत्पत्ति मानी जाती हैं।

बोध प्रश्न 1

1 सही कथन पर (✓) चिह्न लगाइए।
प्राकृतिक भूगोल की जानकारी:

i) विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जीवन शैलियों को समझने में मदद करती है,
ii) अतीत में सांस्कृतिक विकास की प्रकृति को समझने में कोई मदद नहीं करती,
iii) का इतिहास के विद्यार्थी के लिए कोई महत्व नहीं है,
iv) आपको केवल विशेष क्षेत्रों के अध्ययन तक सीमित कर देती है।

2 मगध के उत्थान की उत्तरदायी प्राकृतिक विशेषताओं का उल्लेख करिए। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में दीजिए।

....
....
....
....
....
....
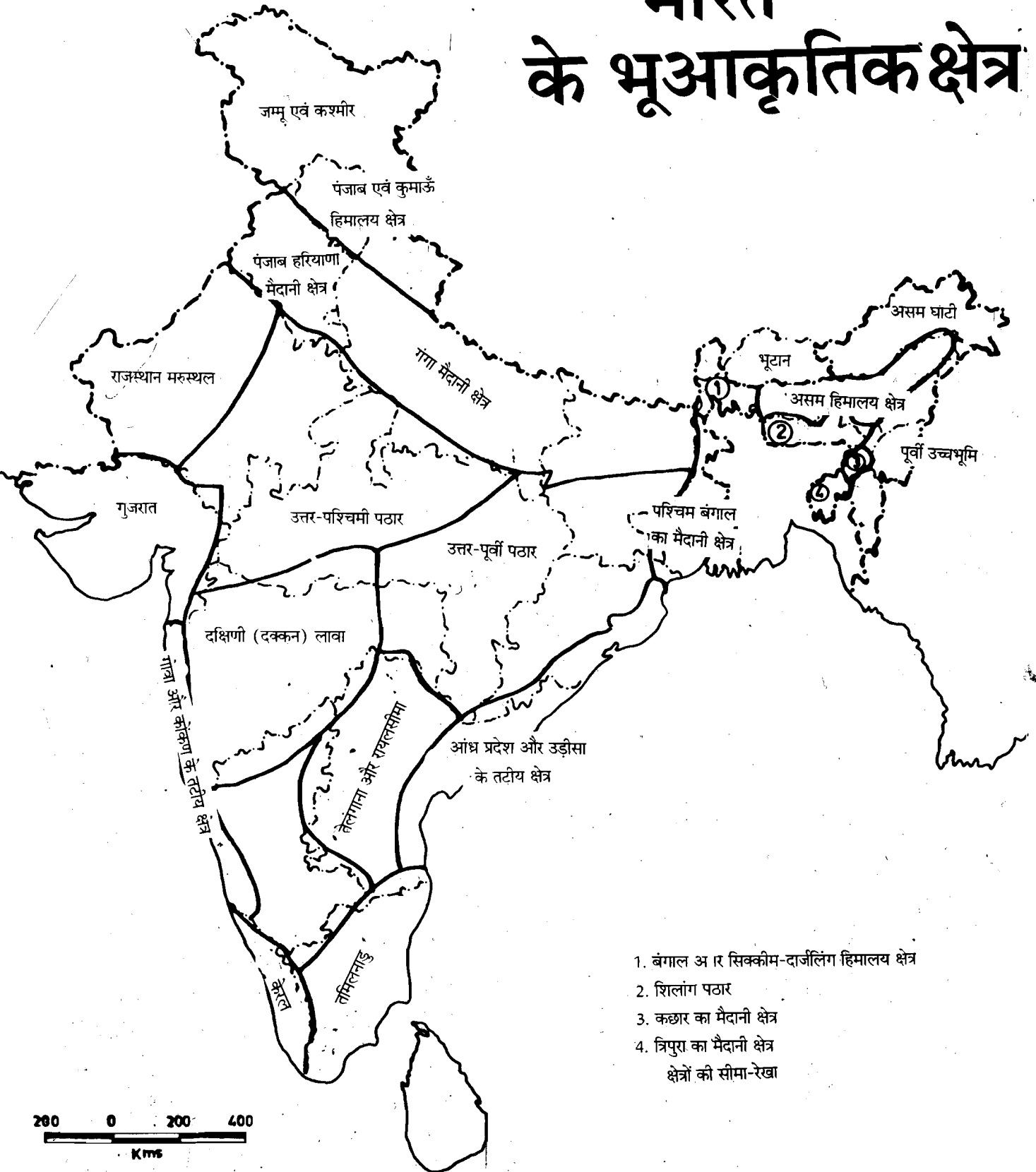
भारत
के भूआकृतिक क्षेत्र
जम्मू एवं कश्मीर
पंजाब एवं कुमाऊँ
हिमालय क्षेत्र
पंजाब हरियाणा
मैदानी क्षेत्र
गंगा मैदानी क्षेत्र
राजस्थान मरुस्थल
गुजरात
उत्तर-पश्चिमी पठार
उत्तर-पूर्वी पठार
दक्षिणी (दक्कन) लावा
गोवा और कोंकण के तटीय क्षेत्र
तेलंगाना और रायलसीमा
आंध्र प्रदेश और उड़ीसा
के तटीय क्षेत्र
केरल
तमिलनाडु
पश्चिम बंगाल
का मैदानी क्षेत्र
भूटान
असम घाटी
असम हिमालय क्षेत्र
पूर्वी उच्चभूमि
1. बंगाल अ ार सिक्कीम-दार्जलिंग हिमालय क्षेत्र
2. शिलांग पठार
3. कछार का मैदानी क्षेत्र
4. त्रिपुरा का मैदानी क्षेत्र
क्षेत्रों की सीमा-रेखा
200
0
200
400
Kms

मानचित्र 2.

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

3 रिक्त स्थान भरिए:

i) भौगोलिक तथ्य मगध के ... (उत्थान और पतन /बाढ़ग्रस्त होने) के कारणों को तय करने में ... (हमारी मदद करते हैं/हमारी मदद नहीं करते हैं)

ii) मनुष्य प्रकृति को सफलता से नियंत्रित ... (करता है /करने का प्रयास करता है)

iii) भारत में मूल भू-आकृतिक विभाजन ... हैं। (पांच /दो /तीन)

iv) मध्यवर्ती क्षेत्र में ... (मूल भू-आकृतिक/उपक्षेत्र) शामिल हैं।

1.4 क्षेत्रीय प्राकृतिक विशेषताएं

अभी तक हमने मोटे तौर पर भौगोलिक विभाजनों की विशेषताओं का सामान्य आधार पर विवेचन किया है। अब हम उन विशिष्ट प्रमुख भौगोलिक इकाइयों को लेंगे जो आमतौर पर भाषा पर आधारित विभाजनों को पुष्ट करती हैं, और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उनकी प्राकृतिक विशेषताओं की चर्चा करेंगे।

1.4.1 हिमालय और पश्चिमी सीमा प्रदेश

हिमालय को तीन प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है:

- पूर्वी हिमालय
- पश्चिमी हिमालय, और
- मध्यवर्ती हिमालय

पूर्वी हिमालय पर्वत शृंखला ब्रह्मपुत्र के पूर्व में उत्तर दक्षिण दिशा में असम से लेकर दक्षिणी चीन तक फैली हुई है। हालांकि पूर्वी हिमालय पर्वतमाला के बीच से गुजरने वाले मार्ग दुर्गम हैं फिर भी प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक कालों में दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण चीन से सांस्कृतिक प्रभावों का आना नहीं रुका। मध्यवर्ती हिमालय पर्वत शृंखलाएं, जो भूटान से चित्राल तक फैली हुई हैं तिब्बत के विशाल पठार की सीमा पर स्थित हैं। भारत और तिब्बत के बीच व्यापार तथा अन्य प्रकार के सम्बन्ध इसी सीमा प्रदेश के माध्यम से बने रहे।

संकरी हिन्दुकुश पर्वत शृंखला हिमालय से दक्षिण पश्चिम की ओर प्राचीन गांधार प्रदेश को घेरती हुई अफगानिस्तान में दूर तक फैली है। भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से पश्चिमी अफगानिस्तान का गहरा सम्बन्ध साम्य पूर्वी ईरान से है। लेकिन दक्षिण-पूर्वी अफगानिस्तान सांस्कृतिक रूप से नवपाषाण काल से ही भारतीय उपमहाद्वीप के निकट रहा है। खैबर दर्रा और अन्य दर्रे तथा काबुल नदी इस क्षेत्र को सिन्धु के मैदान से जोड़ते हैं। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि अफगानिस्तान के इस भाग में स्थित शोर्टुगाई हड़प्पा की सभ्यता का एक प्रमुख व्यापारिक बाह्य केन्द्र था। काबुल और कन्धार जैसे प्राचीन नगर ईरान और भारत के बीच व्यापार मार्गों पर स्थित हैं।

बलूचिस्तान की ओर चलते हुए दक्षिण पश्चिम अफगानिस्तान में रेगिस्तानी हालात काफी प्रखर रूप से सामने आते हैं। इस क्षेत्र में नवपाषाण काल से ही पशुचारण को जीवन के लिये एक लाभदायक अनुकूल नीति के रूप में अपनाया जाता रहा है। बलूचिस्तान का तटवर्ती क्षेत्र जो कि मकरान कहा जाता है, मानव बस्तियों के लिए कभी भी उपयुक्त क्षेत्र नहीं रहा। उदाहरण के लिए, भारत अभियान से वापस लौटते हुए जब सिकन्दर अपनी सेना के एक भाग को मकरान तट से होकर ले गया तो उसे भोजन और पानी की कमी के कारण भारी जन हानी उठानी पड़ी। यह प्रदेश एक प्रकार का केन्द्रीय स्थल रहा है क्योंकि यहां से एक ओर तो मध्य एशिया और चीन के लिए रास्ते निकलते हैं। तो दूसरी ओर ईरान और सुदूर पश्चिम की ओर रास्ते निकलते हैं।

वे सभी प्रमुख मार्ग, जो अफगानिस्तान होकर भारत के मैदानों को ईरान और मध्य एशिया से जोड़ते हैं, गोमाल, बोलन और खैबर दर्रों से होकर जाते हैं। ऐतिहासिक कालों अथवा उससे भी पहले से व्यापारी, हमलावर और विविध सांस्कृतिक प्रभाव इन सभी प्रमुख मार्गों से होकर भारत आते रहे। यूनानी, शक, कुषाण, हूण और अन्य हमलावर इन्हीं मार्गों से भारत आए। बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के अन्य प्रभाव अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक इन्हीं दर्रों से होकर पहुंचे। इस तरह ऐतिहासिक रूप से अफगानिस्तान और बलूचिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र महत्वपूर्ण सीमान्त क्षेत्र रहे हैं।

1.4.2 सिंधु का मैदान

इन दर्रों से निकलने वाले ये मार्ग सिंधु के उपजाऊ मैदानों की तरफ ले जाते हैं। इस मैदान को दो भागों में बांटा जा सकता है:

- पंजाब, और
- सिंध

पंजाब (इस समय भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजित) का शाब्दिक अर्थ है पांच नदियों की भूमि। विस्तृत जलोढ़ मैदान के बीच से बहने वाली सिंधु नदी की पांच सहायक नदियों ने इस क्षेत्र को उपमहाद्वीप का बहु-धान्य प्रदेश बना दिया है। इस मैदान का पूर्वी भाग गंगा के थाले से जा मिलता है। पंजाब विभिन्न संस्कृतियों का मिलन स्थल और उनके परस्पर एकीकृत होने का स्थान रहा है। पूर्व स्थापित संस्कृतियों के तथा बाहर से आने वाले नये तत्व यहां घुल-मिल कर एक होते रहे हैं। पंजाब की सामरिक स्थिति और यहां की समृद्धि सदा ही हमलावरों को आकर्षित करती रही है।

सिंधु घाटी का निचला क्षेत्र और डेल्टा मिल कर सिंध प्रदेश का निर्माण करते हैं। यह प्रदेश उत्तर पश्चिम में बलूचिस्तानी पहाड़ियों और दक्षिण-पूर्व में थार के रेगिस्तान से घिरा हुआ है इस प्रदेश के गुजरात के साथ ऐतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं। इस प्रदेश में वर्षा बहुत कम होती है लेकिन यहां की जलोढ़ भूमि बहुत उपजाऊ है। सिंध प्रदेश, सिंधु नदी का प्रदेश है और बड़ी मात्रा में चावल और गेहूं उत्पन्न करता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सिंधु मैदान में ईसा पूर्व दूसरी सहस्त्राब्दि के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप की पहली नागरीय संस्कृति पनपी। इनके दो प्रमुख नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो क्रमश: पंजाब और सिंध में स्थित हैं।

1.4.3 गांगेय उत्तरी भारत

सिंधु के मैदान की तुलना में गंगा का मैदान जलवायु की दृष्टि से अधिक आद्र है। वार्षिक वर्षा जो सिंधु-गंगा विभाजक पर 50 सेंटीमीटर होती है वह बंगाल तक पहुंचते-पहुंचते बढ़ कर दो सौ सेंटीमीटर हो जाती है। गंगा के मैदानी क्षेत्र को तीन उप-क्षेत्रों में बांटा जा सकता है:

- ऊपरी क्षेत्र,
- मध्य क्षेत्र, और
- निचला क्षेत्र।

पश्चिम और मध्य उत्तर प्रदेश के ऊपरी मैदानी क्षेत्र में अधिकांश दोआब का इलाका शामिल है। यह संघर्ष और सांस्कृतिक संश्लेषण का क्षेत्र रहा है। हड़प्पा संस्कृति के इस क्षेत्र तक फैले होने के बहुतायत में साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। यह क्षेत्र "चित्रित धूसर या भूरे भांड संस्कृति" का केन्द्र भी था और उत्तर वैदिक काल में हलचल भरी गतिविधियों का केन्द्र इलाहाबाद (प्राचीन प्रयाग) भी दोआब की सीमा पर गंगा और यमुना नदियों के संगम पर स्थित है। गांगेय मैदान का मध्य क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैला हुआ है। यह वही क्षेत्र है जहां प्राचीन कौशल, काशी और मगध स्थित थे। यह क्षेत्र ईसा पूर्व छठी शताब्दी से नगर जीवन, मौद्रिक अर्थव्यवस्था तथा व्यापार का केन्द्र रहा है। इसी प्रदेश ने मौर्य साम्राज्य के विस्तार को आधार प्रदान किया और यह भू-प्रदेश राजनीतिक दृष्टि से गुप्त काल पांचवी शताब्दी इसवी तक महत्वपूर्ण बना रहा।

गंगा के मैदान का ऊपरी और मध्य क्षेत्र भौगोलिक रूप से उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणियों और दक्षिण में मध्य भारत की पर्वत श्रृंखलाओं से सीमाबद्ध होता है। गंगा के मैदान का निचला क्षेत्र बंगाल प्रान्त के साथ फैला हुआ है। बंगाल का विस्तृत मैदान, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ यानी कछारी मिट्टी से निर्मित हुआ है। मैदान के निचले क्षेत्रों में

भारी वर्षा होने से यहां घने जंगल और दल-दल हैं। इनके कारण बंगाल में प्रारंभिक बस्तियों की बसावट में काफी बाधाएं आईं। इस जलोढ़ भूमि की उर्वरता का उपयोग तभी किया जा सका जब लौह तकनीक पर नियंत्रण और उसका प्रयोग अच्छी मात्रा में शुरू हो गया। इस क्षेत्र में मध्य क्षेत्रीय मैदान की नगरीय संस्कृति का प्रवेश अपेक्षाकृत देर से हुआ। यहां के पर्यावरण को देखते हुए तालाब और पोखर प्राचीन समय से ही बंगाल के जीवन में विशिष्ट बने रहे हैं। प्राचीन समय से ही मछली यहां के सभी वर्गों के भोजन का आवश्यक अंग रही है।

अन्य वृहद बसावट वाले क्षेत्रों की तुलना में गंगा का मैदान अनेक घनी बस्तियों वाला क्षेत्र रहा है। जनसंख्या घनत्व भी यहां अपेक्षाकृत अधिक रहा है। ईसा पूर्व पहली सहस्त्राब्दि से ही यह क्षेत्र भारतीय सभ्यता का मुख्य केन्द्र रहा है। अति प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक इस प्रदेश की यह स्थिति बनी हुई है। बंगाल के मैदान से लगी हुई ब्रह्मपुत्र द्वारा निर्मित दूर तक फैली हुई असम घाटी है। यह 600 किलोमीटर से भी अधिक लम्बाई में फैली हुई है। सांस्कृतिक रूप से असम बंगाल के निकट है। लेकिन ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से यह प्रदेश उड़ीसा की तरह देर से विकास प्रक्रिया में आने वाला प्रदेश है।

1.4.4 पूर्वी, पश्चिमी और मध्य भारत

मध्य भारत जैसा कि पहले बताया जा चुका है, एक पूरी तरह भिन्न प्रकार का क्षेत्र है और उसमें कोई भी ऐसा विशेष स्थान नहीं है जिसे केन्द्र स्थान मान कर बात की जा सके। यह एक पर्वतीय प्रदेश है जहां पहाड़ियां अधिक ऊंचाई तक नहीं पहुंचती। प्रप्रातीय ढाल इस क्षेत्र की पर्वत श्रृंखलाओं को बीच-बीच में खंडित करते हैं और घाटियां इन्हें विभाजित करती हैं। ये पर्वत श्रृंखलाएं सामान्य रूप से पूर्व से पश्चिम की ओर चलती हैं। लेकिन इस भू-आ[illegible]तिक क्षेत्र के उत्तर, पश्चिम भाग में अरावली पर्वत श्रृंखलाएं दक्षिण पश्चिम से उत्तर-पूर्व [illegible] ओर फैली हुई हैं। अरावली पर्वत श्रृंखलाएं मरू प्रदेश राजस्थान को लगभग दो भागों में [illegible]जित करती हैं। अरावली पर्वत श्रृंखला के पूर्व में राजस्थान राज्य का दक्षिण पूर्वी भाग म[illegible]ल[illegible] उप-क्षेत्र का एक अंग है। इस प्रदेश की मिट्टी उपजाऊ है। इसलिए यहां सिंचाई के अ[illegible]ाव के बावजूद अच्छी फसलें हो जाती हैं। इस प्रदेश में ताम्र-पाषाण युगीन बस्तियां काप[illegible] संख्या म[illegible] फैली हुई हैं। इसकी भौगोलिक अवस्थाओं को देखते हुए प्रतीत होता है कि यह प्रदेश हड़प्पा-कालीन समुदायों और मध्य भारत तथा उत्तरी दक्कन के दूसरे ताम्र पाषाण युगीन समुदायों के बीच पुल के रूप में रहा होगा। सांस्कृतिक रूप से इस प्रदेश में उत्तर कालों में, उत्तरी मैदानों की संस्कृति का ही विस्तार हुआ। इस प्रदेश के पूर्व में ऊपरी महानदी क्षेत्र में छत्तीसगढ़ का मैदान एक छोटा उपजाऊ क्षेत्र है। यहां अच्छी वर्षा होती है और धान उगाया जाता है। चौथी-पांचवी शताब्दी से यहां का ऐतिहासिक विकास उसी प्रकार का था जैसा कि पश्चिमी उड़ीसा के ऊँचे नीचे पहाड़ी क्षेत्रों में हुआ। इन क्षेत्रों में भौगोलिक निकटता के कारण सांस्कृतिक और राजनीतिक आदान-प्रदान होता रहा।

यह अधिकांश भू-भाग जिसे हमने मध्य भारत बताया है, आज मध्य प्रदेश के नाम से जाना जाता है। इस प्रदेश में उत्तर से दक्षिण यात्रा में विंध्य और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाएं तथा नर्मदा और ताप्ती नदियां रुकावट बनती हैं। मध्य भारतीय क्षेत्र, जिसमें विशेष रूप से दक्षिण बिहार, पश्चिम उड़ीसा और पूर्वी मध्य प्रदेश आते हैं, आदिवासी बहुल क्षेत्र है। फिर भी यह ऐसा क्षेत्र है जिसमें बाह्य तत्वों के प्रवेश की गति धीमी और निरंतर रही। इस प्रदेश के आदिवासी निकटवर्ती क्षेत्रों के सांस्कृतिक प्रभाव में आकर प्रारंभिक ऐतिहासिक कालों से या कहें कि गुप्त काल से ही, भारतीय समाज के प्रमुख जाति-कृषक आधार वाले ढांचे से जुड़ते रहे।

गुजरात मध्य भारत क्षेत्र के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह प्रदेश तीन प्राकृतिक भागों में बंटा हुआ है। सौराष्ट्र अनर्त (उत्तरी गुजरात) और लता (दक्षिण गुजरात) अनर्त की विशेषता यहां अर्ध शुष्क वायु प्रवाहित मिट्टी है तो लता में पश्चिम तट का उपजाऊ क्षेत्र शामिल है। गुजरात का मध्यवर्ती प्रायद्वीप काठियावाड़ कहलाता है। इस प्रदेश का एक और प्राकृतिक भाग कच्छ के रण का निचला इलाका है। मानसून के दिनों में कच्छ का रण बादली क्षेत्र में बदल जाता है। इस प्राकृतिक उप-विभाजन के बावजूद गुजरात की अपनी सांस्कृतिक पहचान और एकता रही है क्योंकि यह प्रदेश विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं और पश्चिमी घाट से पूर्व में और उत्तर में मरुस्थल से सीमाबद्ध है। हालांकि यह एक अलग-थलग क्षेत्र प्रतीत होता है किन्तु

वास्तव में यह हड़प्पा कालीन समय से ही निरंतर प्राचीन बस्तियों का क्षेत्र रहा है। सौराष्ट्र में इसकी सिंधु नदी के साथ भौगोलिक निकटता के कारण हड़प्पा की सभ्यता का विस्तार हुआ। यह क्षेत्र प्राय: सिंध तथा सुदूर पश्चिमी क्षेत्र और भारत के बीच संक्रान्ति का क्षेत्र रहा है यहां का मैदान नर्मदा, ताप्ती, साबरमती और माही नदियों द्वारा मध्य भारतीय पर्वत श्रृंखलाओं से लाई गई कछारी भूमि से समृद्ध है। अपनी संरक्षित स्थिति और लम्बी तट रेखा के कारण गुजरात चार हजार वर्षों से भी अधिक समय से तटीय (समुद्र तटीय) और विदेशी व्यापार का केन्द्र रहा है। मध्य भारत पर्वत श्रृंखलाओं के पूर्वी छोर पर गंगा के डेल्टा के दक्षिण पश्चिम में उड़ीसा के तटवर्ती मैदान हैं। हालांकि इसी तट पर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली कुछ अन्य नदियां भी हैं। ये तटवर्ती मैदान पर्वत श्रृंखलाओं का ही एक विस्तार है और जैसा कि छत्तीसगढ़ के मैदान के सम्बन्ध में पहले कहा जा चुका है, इसके कुछ प्राकृतिक लक्षण भी वैसे ही हैं। इस तरह उड़ीसा में दो भू-आकृतिक भाग हैं जो विकास की असमान प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं। समृद्ध कृषि आधार वाला उपजाऊ तटवर्ती मैदान मानव गतिविधि का स्थल और सामाजिक सांस्कृतिक विकास का केन्द्र रहा है। उड़ीसा ने अपनी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान देर से पहली शताब्दी में बनायी थी।

1.4.5 प्रायद्वीपीय भारत

प्रायद्वीपीय भारत की सीमाएं इसको घेरने वाले तटवर्ती मैदानों और दक्कन के पठार से निर्धारित होती हैं। तटवर्ती मैदान पूर्व में और सुदूर दक्षिण में चौड़े हैं, जबकि पश्चिम में ये संकरे हैं। बंबई और पालघाट के बीच का मैदान सर्वाधिक संकरा है। दक्कन का पठार तीन प्रमुख भागों में बंटा हुआ है। ये भाग महाराष्ट्र, आंध्र और कर्नाटक राज्यों में पड़ते हैं। महाराष्ट्र में अन्य क्षेत्रों के अलावा दक्कन के पठार का उत्तरी भाग शामिल है। सुदूर दक्षिण के लिए सांस्कृतिक प्रभावों का प्रसार दक्कन द्वारा होता रहा है। और ऐसा इसलिए संभव हुआ होगा क्योंकि पश्चिम भाग को छोड़ कर वहां और घने जंगल नहीं हैं। महाराष्ट्र और आन्ध्र के बीच सीमा प्राकृतिक रूप से निर्धारित हुई प्रतीत होती है क्योंकि यह सीमा रेखा उपजाऊ काली मिट्टी के वितरण के आधार पर बनी है। यानी इस सीमा के इस ओर महाराष्ट्र में उपजाऊ काली मिट्टी है तो सीमा के उस पार तैलंगाना में लाल मिट्टी है जो नमी सोखने में सक्षम नहीं होती है। इसलिए तैलंगाना तालाबों तथा अन्य प्रकार के कृत्रिम सिंचाई के साधनों का क्षेत्र रहा है। प्रारंभिक बस्तियों के विकास पर पर्यावरण सम्बन्धी भिन्नताओं का प्रभाव इस क्षेत्र में जितने रूप में सामने आता है उतना अन्य क्षेत्रों में नहीं। दक्षिण पश्चिम आन्ध्र के प्रारंभिक नव-पाषाण युगीन लोगों ने अनुकूल व्यवहार नीति के रूप में पशु चारण को अपनाया तो उत्तरी दक्कन ताम्र-पाषाण युगीन मानव समुदायों ने कृषि को अपना उद्यम बनाया।

कर्नाटक में दक्षिण-पश्चिमी दक्कन शामिल है। कुछ छोटे-छोटे क्षेत्रों को छोड़ कर दक्कन लावा का फैलाव यहां तक नहीं हैं इसके अलावा पश्चिम घाट और पश्चिमी तटवर्ती मैदान का एक भाग इस राज्य में शामिल है राज्य दक्षिण भाग में अपेक्षाकृत अधिक पानी है और यह क्षेत्र मानव बस्तियों के लिए उत्तर की तुलना में अधिक उपयुक्त है। महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच विभाजन रेखा किन्हीं विशेष प्राकृतिक दशाओं को नहीं दर्शाती। इस क्षेत्र में पर्यावरण द्वारा पैदा की गई बाधाओं की पर्याप्त पुष्टि इस क्षेत्र के नव-पाषाण युगीन लोगों के अपेक्षाकृत अपर्याप्त सांस्कृतिक अवशेषों से होती है।

चार दक्षिण भारतीय राज्यों में आन्ध्र विशालतम है। इसमें तेलगाना, उपजाऊ तटवर्ती मैदान, रायल सीमा जैसे अनेक उप क्षेत्र शामिल हैं। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, राज्य का उत्तर-पश्चिमी भाग तेलंगाना कहा जाता है। यहां की ललछोंहा मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है और यहां की मुख्य फसलें, ज्वार, दलहन और तिलहन हैं। पूर्व में पूर्वी घाट और तटवर्ती मैदान का एक भाग उत्तर में उड़ीसा की सीमा पर महेन्द्र गिरि के निकट से लेकर दक्षिण में तमिलनाडु तक, जिसका अधिकेन्द्र कृष्णा-गोदावरी की संयुक्त डेल्टा है, आन्ध्र-प्रदेश में शामिल है। यह एक चावल प्रधान क्षेत्र है। दोनों नदियों के बीच का तटवर्ती क्षेत्र जो प्राचीन समय में वैनगी नाम से जाना जाता था धान का प्रमुख उत्पादन केन्द्र रहा है। कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच रायचूर दोआब की तरह, इस क्षेत्र के लिए भी प्राचीन ऐतिहासिक कालों में निरंतर संघर्ष होते रहे।

1.4.6 सुदूर दक्षिण

दक्कन का पठार सुदूर दक्षिण में नीलगिर और कार्डामोम पहाड़ियों जैसे अलग-अलग खण्डों में विभाजित हो जाता है। ये पहाड़ियां मोटे तौर पर पूर्वी और पश्चिमी तटवर्ती मैदानों को विभाजित करती हैं। दक्षिण में विस्तृत पूर्वी तटवर्ती मैदान और इससे जुड़े भीतरी प्रदेश तमिलनाडु में आते हैं। तमिलनाडु के तटवर्ती जिलों में भारी मात्रा में चावल पैदा होता है। कावेरी का मैदान और इसका डेल्टा इस क्षेत्र का अधिकेन्द्र है। इस क्षेत्र की नदियाँ मौसमी हैं इसलिए यहां के किसान पल्लव चोल कालों से ही सिंचाई के लिए तालाबों पर निर्भर रहते आए हैं। असिंचित क्षेत्रों में ज्वार, दलहन और तिलहन की फसलें होती हैं। यह जानना रोचक है कि इन पारिस्थितिक विविधिताओं का उल्लेख, जिनके कारण विविध वैकल्पिक जीवन शैलियाँ अस्तित्व में आईं, इस भूमि के प्राचीनतम साहित्य यानी संगम साहित्य में प्राप्त होता है। भौगोलिक, भाषायी और सांस्कृतिक रूप से इस प्रदेश की अपनी निजी पहचान बनी है।

पश्चिमी तटवर्ती मैदान भी सुदूर दक्षिण में मालावार यानी आज के केरल राज्य तक फैला हुआ है। केरल में धान तथा अन्य फसलों के अलावा काली मिर्च तथा अन्य मसालों का उत्पादन भी होता है पश्चिम के साथ केरल इन मसालों का व्यापार उत्तर मौर्य काल से ही होता आया है। तमिलनाडु की ओर से केरल में प्रवेश पालघाट घाटी के द्वारा और पश्चिमी घाट के दक्षिणी छोर से संभव है। भूमि से अपेक्षाकृत अलग-थलग केरल राज्य, समुद्र की ओर से पूरी तरह खुला हुआ है। यह एक रोचक सत्य है कि भारत में ईसाई प्रभाव और बाद में मुस्लिम प्रभाव समुद्र के माध्यम से ही आया। यह ध्यान देने योग्य है कि केरल और तमिलनाडु, दोनों ही प्रदेश गंगा के मैदान की तरह घने आबाद हैं।

बोध प्रश्न 2

1 निम्न में से कौन से कथन सही (✓) अथवा गलत (×) हैं:

i) पूर्वी हिमालय क्षेत्र चीन के सांस्कृतिक प्रभावों से अछूता रहा।
ii) हड़प्पा पंजाब में अवस्थित है।
iii) गंगा के मैदान में सबसे अधिक मानव बस्तियां फली फूलीं।
iv) दक्कन पठार का तटवर्ती मैदान बम्बई और पालघाट के बीच बहुत चौड़ा है।

2 खाली स्थान भरिए:

i) हिमालय को .... (पांच /तीन) मुख्य .... (क्षेत्रों /इकाइयों) में बांटा जा सकता है।

ii) कच्छ का रन .... (वर्षा /शरद) ऋतु के दौरान .... (समुद्र /दलदल) में बदल जाता है।

iii) सुदूर दक्षिण की असिंचित भूमि .... (गेंहू /जौ /ज्वार) और .... (तिलहन / चावल) पैदा करती है।

iv) तेलंगाना .... (नदियों /तालाबों) की और कृत्रिम .... (खेती /सिंचाई) की भूमि हो गई है।

1.5 सारांश

भारतीय उपमहाद्वीप में प्राकृतिक विभाजन मोटे तौर पर भाषाई क्षेत्रों के अनुरूप है। इन भाषाई क्षेत्रों ने समयानुकूल विकसित होकर अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान कायम की। विभिन्न प्राकृतिक भागों के लोगों को विभिन्न रुचियां, भोजन संबंधी आदतें और वस्त्र शैलियां हैं। ये आदतें और रुचियां विभिन्न प्राकृतिक क्षेत्रों की सीमाओं के अन्दर विकसित हुए संसाधनों के उपयोग के तरीके, पर्यावरणीय व्यवस्था और जीवन के ढंग से पैदा हुईं। बृहद क्षेत्रों के अन्दर और दो बृहद क्षेत्रों के बीच जो असमान विकास हुआ उसे इन क्षेत्रों में उपलब्ध या अनुपलब्ध संसाधनों के संदर्भ में, और मानवीय तथा तकनीकी हरित क्षेत्र के आधार पर समझा जा सकता है। देश की प्रमुख नदीयां घाटियां, जिनमें प्रति वर्ष वर्षा का औसत पचास

भारत
वर्षा
सूचकांक
(वर्षा, सेंटीमीटर में)
200 से ऊपर
100-200
60-100
20-60
20 से नीचे
200
0
200
400
Kms.

मानचित्र 3.
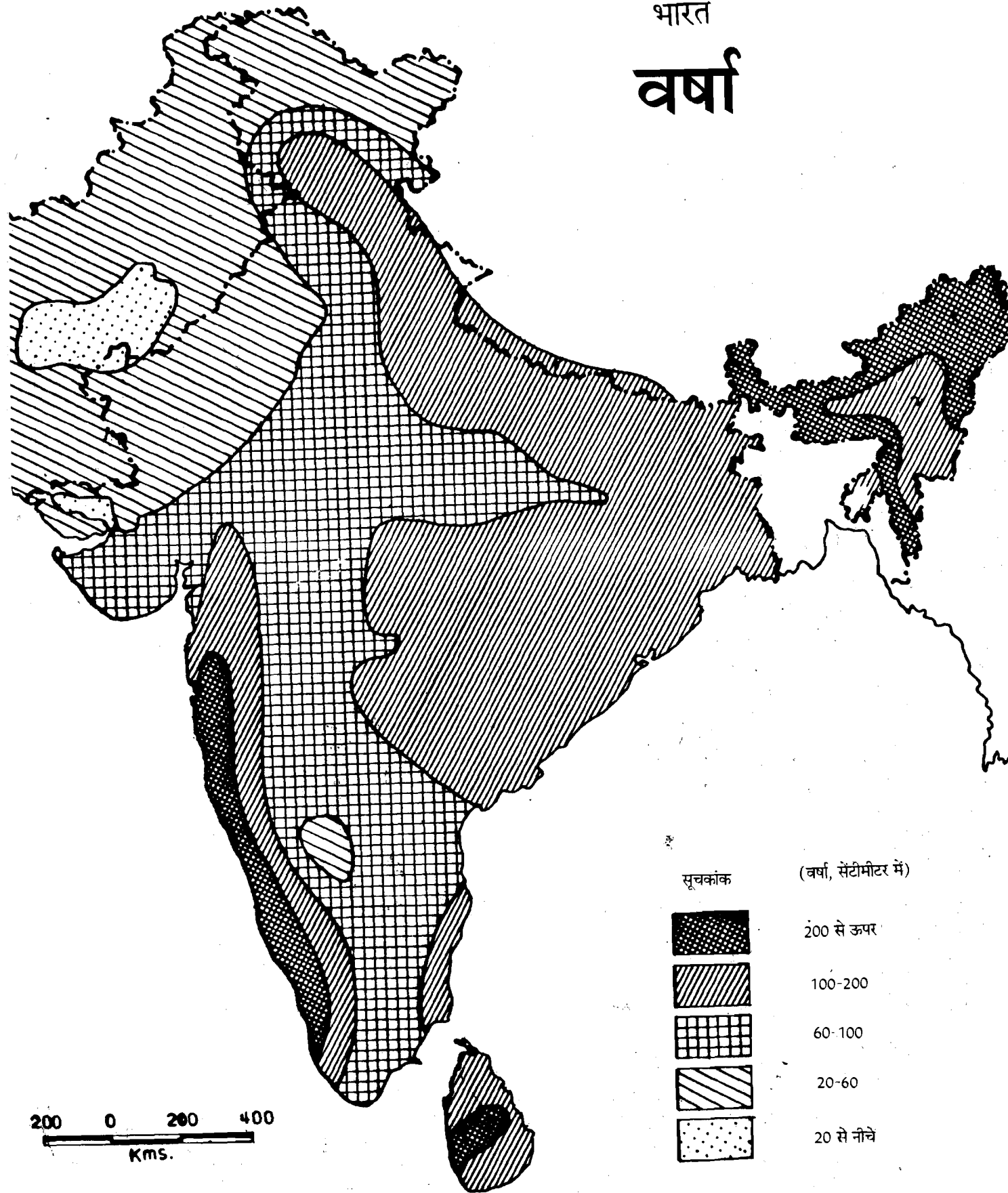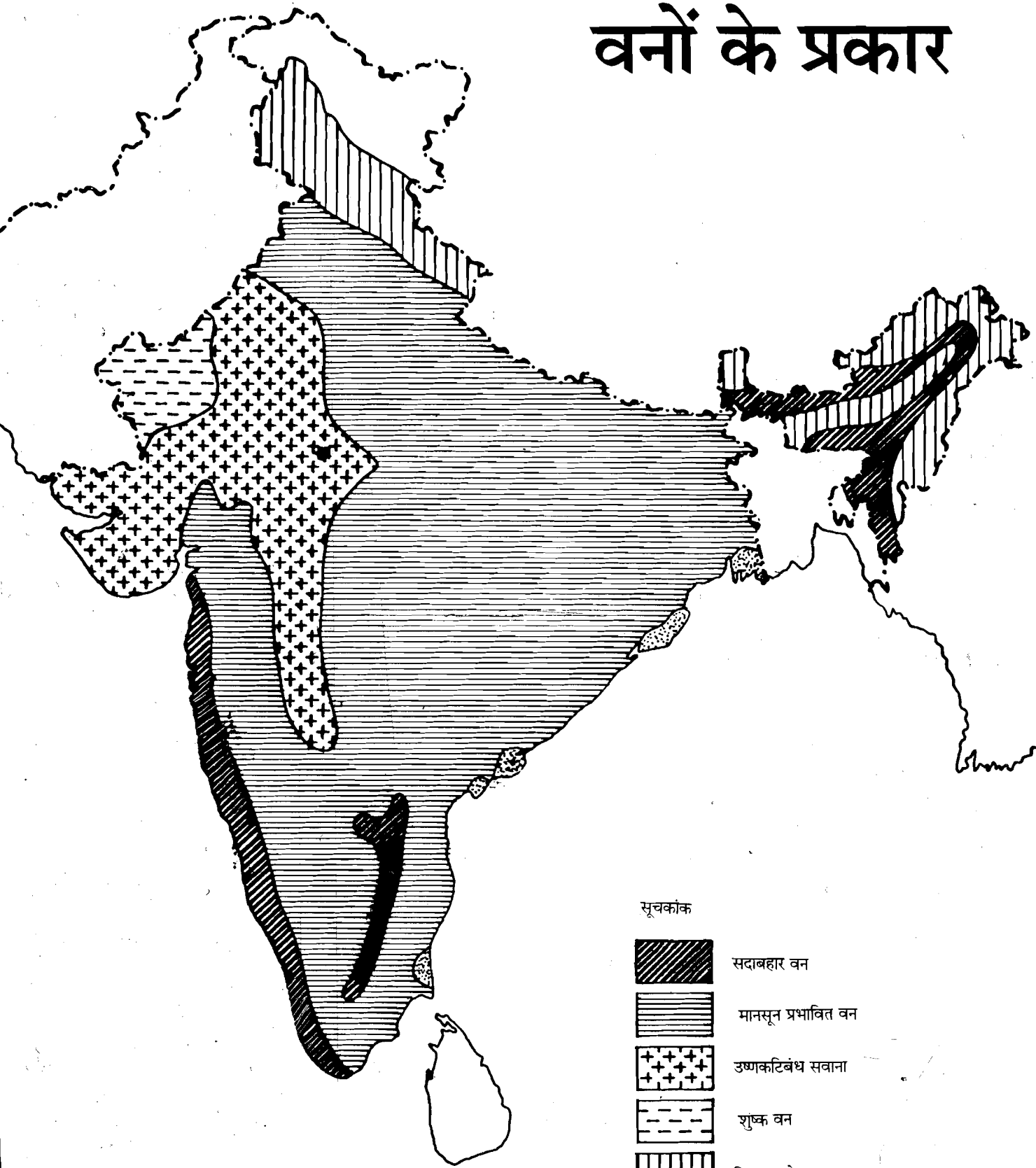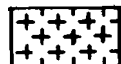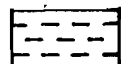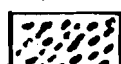
भारत
वनों के प्रकार
सूचकांक
सदाबहार वन
मानसून प्रभावित वन
उष्णकटिबंध सवाना
शुष्क वन
हिमालय के वन
तटीय एवं डेल्टाई वन
200 0 200 400
Kms.

मानचित्र 4.

और सौ सेंटीमीटर के बीच रहा है और जो बड़े पैमाने पर कृषि समुदायों को पोषण प्रदान करने में सक्षम रही हैं, वे युगों से पूरी तरह आबाद रही हैं। कम या अधिक वर्षा वाले क्षेत्र अनुर्वरता और घनी वन्य वनस्पति की समस्याओं से ग्रस्त रहे हैं। और ऐसे क्षेत्र कृषि के लिए अधिक उपयुक्त नहीं रहे हैं। उपमहाद्वीप में इष्टतम वर्षा वाले क्षेत्र और कृषि के लिए साफ किए गए क्षेत्रों में आश्चर्यजनक सह-सम्बन्ध पाया गया है (मानचित्र देखिए)। ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का विकास सभी जगह न तो संतुलित हुआ है और न एक-जैसा।

उत्तर में हिमालय और दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में समुद्री सीमाओं से घिरा भारतीय उपमहाद्वीप एक बन्द और अलग क्षेत्र होने का आभास कराता है। मगर इन सीमाओं के पार से सांस्कृतिक प्रभावों का आदान-प्रदान होता रहा, और इस महाद्वीप के पश्चिम, पश्चिम-एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ समुद्र मार्ग से सम्बन्ध बने रहे। आन्तरिक रूप से मध्य भारत का ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम पहाड़ी प्रदेश, देश के विभिन्न प्रदेशों के बीच विचारों और प्रभावों के अदान-प्रदान के मार्ग में कभी भी वास्तविक बाधा नहीं बन सका। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हालांकि भूगोल और पर्यावरण ऐतिहासिक विकास को पूरी तरह नियत नहीं करते, फिर भी उसे पर्याप्त मात्रा में प्रभावित करते हैं।

1.6 शब्दावली

अनुकूलन नीति: मनुष्य द्वारा अपनाई गई वह नीति या ढंग जिससे वह नए पर्यावरण या संस्कृति के साथ सामंजस्य करता है उसके अनुकूल स्वयं को ढालता है।

जलोढ़ मैदान: नदी द्वारा लाई गई मिट्टी या बालू आदि के इकट्ठा होने से बना मैदान।

जाति-कृषक आधार: प्रारंभिक व्यवस्थित कृषि-समाज से सम्बन्धित, जिसके सदस्य सामाजिक रूप से जाति-आधार पर वर्गीकृत थे। ये सदस्य अपने समाज के खेती करने वाले सदस्यों की पैदावार पर निर्भर रहते थे।

ताम्र पाषाण युगीन बस्तियां: उस युग का प्रतिनिधित्व करने वाली बस्तियां जिसमें पत्थर और तांबे दोनों से ही निर्मित वस्तुओं का उपयोग होता था।

सीमान्त क्षेत्र: एक कृषिक बस्ती के बाहर का क्षेत्र सामान्य रूप से ऐसे क्षेत्रों का कुछ सामाजिक-आर्थिक सम्बन्ध मुख्य बस्ती से होता था। उदाहरण के लिए, ऐसे सीमान्त क्षेत्रों में रहने वाले खानाबदोश मुख्य बस्ती को दूध, भेड़, खाल, ऊन आदि की आपूर्ति किया करते थे।

भौगोलिक निकटता: प्राकृतिक रूप से निकटवर्ती या साथ-साथ लगे क्षेत्र।

भाषाई विभाजन क्षेत्र: प्राकृतिक क्षेत्र का उस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषाओं के आधार पर विभाजन।

तटवर्ती: समुद्र तट पर स्थापित।

चित्रित भूरे या धूसर भांड संस्कृति: गंगा दोआब क्षेत्र में प्राप्त भूरे रंग के बर्तनों या भांडो से सम्बन्धित संस्कृति।

पशुचारण: वह पेशा या व्यवसाय जिसके तहत पशु पाले जाते हैं।

भू-आकृतिक क्षेत्र या प्राकृतिक क्षेत्रों के अर्थ में: भारत के भू-आकृतिक या प्राकृतिक क्षेत्रों के अर्थ में।

तकनीकी हस्तक्षेप: एक क्षेत्र की संसाधन क्षमता के विकास में नई तकनीकों और जानकारियों का प्रभाव।

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1 (1)

2 आपके उत्तर में भारी उपजाऊ भूमि. सिंचाई सुविधाएं. पत्थर लकड़ी जैसे विभिन्न संसाधनों की निकटता आदि को शामिल किया जाना चाहिए। देखिए उप-भाग 1.2.1।

3 i) उत्थान और पतन. हमारी मदद करते हैं
ii) करने का प्रयास करता है
iii) तीन
iv) उपक्षेत्र

बोध प्रश्न 2

1 i) × ii) ✓, iii) ✓, iv) ×

2 i) तीन. भागों ii) वर्षा. दलदल
iii) ज्वार. तिलहन iv) तालाब सिंचाई